

## स्वयं के जानने से संयम और समय की पहचान

जैसे बाप के लिए कहा हुआ है—कि वह जो है, जैसा है, वैसा ही उनको जानने वाला सर्व प्राप्तियां कर सकता है। वैसे ही स्वयं को जानने के लिए भी जो हूँ, जैसा हूँ, ऐसा ही जान कर और मान कर सारा दिन चलते-फिरते हो? क्योंकि जैसे बाप को सर्व स्वरूपों से वा सर्व सम्बन्धों से जानना आवश्यक है ऐसे ही बाप द्वारा स्वयं को भी ऐसा जानना आवश्यक है। जानना अर्थात् मानना। मैं जो हूँ, जैसा हूँ ऐसे मानकर चलेंगे तो क्या स्थिति होगी? देह में विदेही, व्यक्त में होते अव्यक्त, चलते-फिरते फरिश्ता वा कर्म करते हुए कर्मातीत क्योंकि जब स्वयं को अच्छी तरह से जान और मान लेते हैं तो जो स्वयं को जानता है उस द्वारा कोई भी संयम अर्थात् नियम नीचे ऊपर नहीं हो सकता। संयम को जानना अर्थात् संयम में चलना। स्वयं को मान करके चलने वाले से स्वतः ही संयम साथ-साथ रहता है। उनको सोचना नहीं पड़ता कि यह संयम है वा नहीं, लेकिन स्वयं की स्थिति में स्थित होने वाला जो कर्म करता है, जो बोल बोलता है, जो संकल्प करता है वही संयम बन जाता है। जैसे साकार में स्वयं की स्मृति में रहने से जो कर्म किया वही ब्राह्मण परिवार का संयम हो गया ना? यह संयम कैसे बने? ब्रह्मा द्वारा जो कुछ चला वही ब्राह्मण परिवार के लिए संयम बना। तो स्वयं की स्मृति में रहने से हर कर्म संयम बन ही जाता है और साथ-साथ समय की पहचान भी उनके सामने सदैव स्पष्ट रहती है। जैसे बड़े आफिसर्स के सामने सारा प्लैन होता है, जिसको देखते हुए वह अपनी-अपनी कारोबार चलाते हैं। जैसे एरोप्लैन वा स्टीमर चलाने वालों के पास अपने-अपने प्लैन्स होते हैं जिससे वह रास्ते को स्पष्ट समझ जाते हैं। इसी प्रकार जो स्वयं को जानता है उससे संयम आटोमेटिकली चलते रहते हैं और समय की पहचान भी ऐसे स्पष्ट होती है। सारा दिन स्वयं जो है, जैसा है वैसी स्मृति रहती है इसलिए गाया हुआ भी है जो कर्म मैं करूंगा मुझे देख सभी करेंगे। तो ऐसे स्वयं को जानने वाला जो कर्म करेगा वही संयम बन जायेगा। उनको देख सभी फालो करेंगे। ऐसी स्मृति सदा रहे। पहली स्टेज जो होती है उसमें पुरुषार्थ करना पड़ता है, हर कदम में सोचना पड़ता है कि यह राइट है वा रांग है, यह हमारा संयम है वा नहीं। जब स्वयं की स्मृति में सदा रहते हैं तो नैचुरल हो जाता है। फिर यह सोचने की आवश्यकता नहीं रहती। कभी भी कोई कर्म बिना संयम के हो नहीं सकता। जैसे साकार में स्वयं के नशे में रहने के कारण अथॉरिटी से कह सकते थे कि अगर साकार द्वारा उल्टा भी कोई कर्म हो गया तो उसको भी सुल्टा कर देंगे। यह अथॉरिटी है ना। उतनी अथॉरिटी कैसे रही? स्वयं के नशे से। स्वयं के स्वरूप की स्मृति में रहने से यह नशा रहता है कि कोई भी कर्म उल्टा हो ही नहीं सकता। ऐसा नशा नम्बरवार सभी में रहना चाहिए। जब फालो फादर है तो फालो करने वालों की यह स्टेज नहीं आयेगी? इसको भी फालो करेंगे ना? साकार रूप फिर भी पहली आत्मा है ना। जो फर्स्ट आत्मा ने निमित्त बनकर के दिखाया तो उनको सेकेण्ड, थर्ड जो नम्बरवार आत्माएं है वह सभी बात में फालो कर सकती हैं। निराकार स्वरूप की बात अलग है। साकार में निमित्त बनकर के जो

कुछ करके दिखाया वह सभी फालो कर सकते हैं नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। इसी को कहा जाता है अपने में सम्पूर्ण निश्चय बुद्धि। जैसे बाप में 100 प्रतिशत निश्चय बुद्धि बनते हैं तो बाप के साथ-साथ स्वयं में भी इतना निश्चय बुद्धि जरूर बनें। स्वयं की स्मृति का नशा कितना रहता है? जैसे साकार रूप में निमित्त बन हर कर्म संयम के रूप में करके दिखाया ऐसे प्रैक्टिकल में आप लोगों को फालो करना है। ऐसी स्टेज है? जैसे गाड़ी अगर ठीक पट्टे पर चलती है तो निश्चय रहता है एक्सीडेंट हो नहीं सकता। बेफिक्र हो चलाते रहेंगे। वैसे ही अगर स्वयं की स्मृति का नशा है, फाउन्डेशन ठीक है तो कर्म और वचन संयम के बिना हो नहीं सकता। ऐसी स्टेज समीप आ रही है। इसको ही कहा जाता है सम्पूर्ण स्टेज के समीप। इस स्वमान में स्थित होने से अभिमान नहीं आता। जितना स्वमान उतनी निर्माणता। इसलिए उनको अभिमान नहीं रहेगा। जैसे निश्चय की विजय अवश्य है, इसी प्रकार ऐसे निश्चयबुद्धि के हर कर्म में विजय है अर्थात् हर कर्म संयम के प्रमाण है तो विजय है ही है। ऐसे अपने को चेक करो कहाँ तक इस स्टेज के नजदीक हैं? जब आप लोग नजदीक आयेंगे तब फिर दूसरों के भी नम्बर नजदीक आयेंगे। दिन-प्रतिदिन ऐसे परिवर्तन का अनुभव तो होता होगा। वेरीफाय कराना, एक दो को रिगार्ड देना वह दूसरी बात है लेकिन अपने में निश्चय रख कोई से पूछना वह दूसरी बात है। वह जो कर्म करेगा निश्चयबुद्धि होगा। बाप भी बच्चों को रिगार्ड देकर के राय सलाह देते हैं ना। ऐसी स्टेज को देखना है कितना नजदीक आये हैं? फिर यह संकल्प नहीं आयेगा पता नहीं यह राइट है वा रांग है; यह संकल्प मिट जायेगा क्योंकि मास्टर नॉलेजफुल हो। स्वयं के नशे में कमी नहीं होनी चाहिए। कारोबार के संयम के प्रमाण एक दो को रिगार्ड देना यह भी एक संयम है। ऐसी स्टेज है, जैसे एक सैम्पल रूप में देखा ना! तो साकार द्वारा देखी हुई बातों को फालो करना तो सहज है ना। तो ऐसी स्टेज समानता की आ रही है ना। अभी ऐसे महान् और गुह्य गति वाला पुरुषार्थ चलना है। साधारण पुरुषार्थ नहीं। साधारण पुरुषार्थ तो बचपन का हुआ। लेकिन अब विशेष आत्माओं के लिए विशेष ही है। अच्छा!

दूसरी मुरली रिवाइज : 5.2.72

## नशा और निशाना

एक सेकेण्ड में अपने को अपने सम्पूर्ण निशाने और नशे में स्थित कर सकते हो? सम्पूर्ण निशाना क्या है उसको तो जानते हो ना? जब सम्पूर्ण निशाने पर स्थित हो जाते हैं—तो नशा तो रहता ही है। अगर निशाने पर बुद्धि नहीं टिकती तो नशा भी नहीं रहेगा। निशाने पर स्थित होने की निशानी है—नशा। तो ऐसा नशा सदैव रहता है? जो स्वयं नशे में रहते हैं वह दूसरों को भी नशे में टिका सकते हैं। जैसे कोई हृद का नशा पीते हैं तो उनकी चलन से, उनके नैन-चैन से कोई भी जान लेता है— इसने नशा पिया हुआ है। इसी प्रकार यह जो सभी से श्रेष्ठ नशा है, जिसको ईश्वरीय नशा कहा जाता है, इसी में स्थित रहने वाला भी दूर से दिखाई तो देगा ना। ऐसी अवस्था हो जो दूर से ही वह महसूस करे कि यह कोई ईश्वरीय लगन में रहने वाली

आत्मायें हैं। ऐसे अपने को महसूस करते हो? जैसे आप कहां भी आते जाते हो तो लोग देखने से ही समझें कि यह कोई प्रभु की प्यारी न्यारी आत्मायें हैं, ऐसे अनुभव करते हैं? भक्ति मार्ग में भी ऐसी आत्मायें होती हैं। उन्होंने के नैन चैन से प्रभु प्रेमी देखने में आते हैं। तो ऐसी स्थिति इसी दुनिया में रहते हुए, ऐसी कारोबार में चलते हुए समझते हो कि यह अवस्था रहेगी या सिर्फ लास्ट में दर्शन-मूर्त की यह स्टेज होगी? क्या समझते हो क्या अन्त तक साधारण रूप ही रहेगा वा यह झलक चेहरों से दिखाई देगी वा सिर्फ लास्ट टाइम जैसे पर्दे के अन्दर तैयार हो फिर पर्दा खुलता है और सीन सामने आकर समाप्त हो जाती है, ऐसे होगा? कुछ समय यह झलक दिखाई देगी। कई ऐसे समझते हैं कि जब फर्स्ट, सेकेण्ड आत्मायें जो निमित्त बनी वही साधारण गुप्त रूप अपना साकार रूप का पार्ट समाप्त कर चले गये तो हम लोग की झलक फिर क्या दिखाई देगी? लेकिन नहीं। सन शोज फादर गाया हुआ है। तो फादर का शो बच्चे प्रैक्टिकल में लाने से ही करेंगे। अहो प्रभु की पुकार जो आत्माओं की निकलेगी वा पश्चाताप की लहर जो आत्माओं में आयेगी वह कब, कैसे आयेगी? जिन्होंने साकार में अनुभव ही नहीं किया उन्होंने को भी बाप के परिचय से कि हम बाबा के बच्चे हैं यह तब मानेंगे कि बरोबर बाप आये लेकिन हम लोगों ने कुछ नहीं पाया। तो यह प्रैक्टिकल रूहानी झलक और फरिश्तेपन की फलक चेहरे से, चलन से दिखाई दे। अपने को और आप निमित्त बनी हुई आत्माओं की स्टेज को देखते हुए अनुभव करेंगे, बाप ने इन्हों को क्या बनाया और फिर पश्चाताप करेंगे। अगर यह झलक नहीं देखते तो क्या समझेंगे? इतना समय ज्ञान तो नहीं लेंगे जो नॉलेज से आपको जानें। तो यह प्रैक्टिकल चेहरे से झलक और फलक दिखाई देगी। बाप के तो महावाक्य ही हैं कि मैं बच्चों के आगे प्रत्यक्ष होता हूँ लेकिन विश्व के आगे कौन प्रख्यात होंगे? वह साकार में बाप का कर्तव्य था, प्रैक्टिकल में बच्चों का कर्तव्य है प्रख्यात होने का और बाप का कर्तव्य है बैकबोन बनने का, गुप्त रूप में मददगार बनने का इसलिए ऐसे भी नहीं कि जैसे मात-पिता का गुप्त पार्ट चला वैसे ही अन्त तक गुप्त वातावरण रहेगा। जयजयकार शक्तियों की गाई हुई है और अहो प्रभु की पुकार बाप के लिए गाई हुई है। आप लोग आपस में भी एक दो के अनुभव करते होंगे, जब विशेष अटेन्शन अपने निशाने वा नशा का रहता है तो भल कितने भी बड़े संगठन में बैठे होंगे तो भी सभी को विशेष कुछ दिखाई जरूर देगा। महसूस करेंगे कि यह समय याद में बहुत अच्छा बैठे। अभी जो साधारण अटेन्शन है वह बदलकर नैचुरल विशेष अटेन्शन हो जायेगा और चेहरे से झलक-फलक दिखाई देगी। सिर्फ स्मृति को शक्तिशाली बनाना है। अच्छा!

**पर्सनल मुलाकात:-**

आप सभी स्वयं को दिव्य बुद्धि और रूहानी दृष्टि के वरदान प्राप्त करने वाली श्रेष्ठ आत्मा समझते हो? ब्राह्मण आत्माओं को यह दोनों वरदान बर्थराइट के रूप में प्राप्त होते हैं। सबका यही वरदान ब्राह्मण-जीवन का फाउण्डेशन है। पास्ट जीवन और वर्तमान ब्राह्मण-जीवन – दोनों का अन्तर इन दो बातों का ही विशेष है। इन दोनों बातों के ऊपर संगमयुगी पुरुषार्थियों का नम्बर बनता है। इन दो बातों को सदा हर संकल्प में, बोल में, कर्म में जितना जो यूज करता है उतना ही नम्बर आगे लेता है। रूहानी दृष्टि, दृष्टि से वृत्ति, कृत्ति स्वतः ही बदल जाती है। दिव्य बुद्धि

द्वारा स्वयं प्रति, सेवा प्रति ब्राह्मण-परिवार के सम्बन्ध-सम्पर्क प्रति सदा और स्वतः हर बात के लिए निर्णय यथार्थ होता है और जहाँ दिव्य बुद्धि द्वारा यथार्थ निर्णय होता है तो निर्णय के आधार पर ही स्वयं, सेवा, सम्बन्ध-सम्पर्क यथार्थ शक्तिशाली बन जाता है। सदा यही स्मृति रखो, “बच्चा बना” अर्थात् बच गया। यह पाठ मुश्किल है क्या? सहज है ना। फिर भूलते क्यों हो?

कई बच्चे ऐसे सोचते हैं कि भूलने चाहते नहीं है लेकिन भूल जाता है। क्यों भूल जाता? तो कहते बहुत समय के संस्कार हैं वा पुराने संस्कार हैं। लेकिन जब मरजीवा बने तो मरने के समय क्या करते हैं? अग्नि संस्कार करते हो ना। तो पुराने का संस्कार किया तब नया जन्म लिया। जब संस्कार कर लिया फिर पुराने संस्कार कहाँ से आये! जैसे शरीर का संस्कार करते हो तो नाम रूप समाप्त हो जाता है। अगर नाम भी लेंगे तो कहेंगे फलाना था। है नहीं कहेंगे। तो शरीर के संस्कार होने बाद शरीर समाप्त हो गया। ब्राह्मण जीवन में किसका संस्कार करते हो? शरीर तो वही है। लेकिन पुराने संस्कारों, पुरानी स्मृतियों का, स्वभाव का संस्कार करते हो तब मरजीवा कहलाते हो। जब संस्कार कर लिया तो पुराने संस्कार कहाँ से आये। अगर संस्कार किया हुआ मनुष्य फिर से आपके सामने आ जावे तो उसको क्या कहेंगे? भूत कहेंगे ना। तो यह भी पुराने संस्कार किये हुए संस्कार अगर जागृत हो जाते हैं तो क्या कहेंगे? यह भी माया के भूत कहेंगे ना। भूतों को भगाया जाता है ना। वर्णन भी नहीं किया जाता है। यह पुराने संस्कार कह करके अपने को धोखा देते हो। कभी लौकिक जीवन के स्मृति में तो नहीं चले जाते? मरजीवा बन गये ना! जैसे शरीर से मरने वाले कभी भी पिछले जन्म को याद नहीं करते, ऐसे अलौकिक जीवन वाले, जन्म वाले, लौकिक जन्म को याद नहीं कर सकते। अभी तो युग ही बदल गया। दुनिया कलियुगी है, आप संगमयुगी हो, सब बदल गया। कभी कलियुग में तो नहीं चले जाते? यह भी बार्डर है। बार्डर क्रास किया और दुश्मन के हवाले हो गये। तो बार्डर क्रास तो नहीं करते? सदा संगमयुगी अलौकिक जीवन वाली श्रेष्ठ आत्मा है, सदा इसी स्मृति में रहो। अच्छा।

**वरदान:- साकार बाप को फालो कर नम्बरवन लेने वाले सम्पूर्ण फरिश्ता भव**

नम्बरवन आने का सहज साधन है—जो नम्बरवन ब्रह्मा बाप है, उसी वन को देखो। अनेकों को देखने के बजाए एक को देखो और एक को फालो करो। हम सो फरिश्ता का मन्त्र पक्का कर लो तो अन्तर मिट जायेगा फिर साइन्स का यन्त्र अपना काम शुरू करेगा और आप सम्पूर्ण फरिश्ते देवता बन नई दुनिया में अवतरित होंगे। तो सम्पूर्ण फरिश्ता बनना अर्थात् साकार बाप को फालो करना।

**स्तोत्र:-**

मनन करने से जो खुशी रूपी मन्त्रवन निकलता है  
वही जीवन को शक्तिशाली बनाता है।